पाठ - 8 चंद्रगहना से लौटती बेर

कवि - केदारनाथ अग्रवाल

प्रस्तावना

आपने **गाँव** की खूबसूरती को देखा है। खुले–खुले खेत, झूमती **फसलें**, लहराते तालाब चमकती चांदनी, चहकते पक्षी और प्रकृति के अनेक सुन्दर दृश्य हमारे मन में हलचल मचाते **हैं**। इन्हें देखकर बड़ा आनंद आता है। देखने के बाद सामान्य व्यक्ति उन्हें भूल भी जाते है, किन्तु कवि का देखना औरों के देखने से अलग होता है। कवि किसी भी **दृश्य** का सूक्ष्म अवलोकन करता है, वह उन दृश्यों को अपने शब्दा में पिरो लेता है और ऐसा आकर्षक बना देता है कि पाठक या श्रोता आंनदित हो उठते हैं। कवि ने इन दृश्यों को **कैसे** उभारा है इन दृश्यों को, आइए पढ़ते हैं कविता– चंद्रगहना से लौटती बेर।

कविता

देख आया चंद्रगहना
देखता **हूँ** दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बांधें मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली,
नीले फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दू हृदय का दान उसको।

और सरसों की न पूछो
हो गई सबसे सयानी
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह–मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।

देखता हूँ मैं: स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।
आर पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियां,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रही वह भी लहरियाँ।

एक चांदी का बड़ा–सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।

हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी।
चुप खड़ा बगुला डुबाए टांग जल मे,
देखते ही मीन चंचल–

ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबाकर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के **हृदय** पर
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

(1) देख आया चन्द्रगहना ..... ब्याह मंडप में पधारी |

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी **हिंदी** पाठ्य–पुस्तक **की कविता** 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' से ली **गई** है। **इसके** कवि केदारनाथ अग्रवाल हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि गांव के प्राकृतिक दृश्यों के बारे में बता रहे हैं, वें प्रकृति क माध्यम से ग्रामीण परिवेश में शादी**-** **ब्याह** के विषय में बताना चाहते है।

व्याख्या: कविता के प्रारम्भ में पहली ही पंक्ति में कवि मानो सूचना दे रहा है– मैं चन्द्रगहना देख आया। लौटते हुए खेत की मेड़ पर अकेला बैठा हुआ वह खेत और उसके आस–पास के दृश्यों को देख रहा है। सबसे पहले उसका ध्यान खेत में उगे हुए चने की ओर जाता है। चने के पौधे का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए है। कवि को लगता है, यह छोटे–से कद का, **बित्तेभर** का चना अपने सिर पर गुलाबी पगड़ी बांधे, सजे–संवरे दूल्हे सा खड़ा है।

चना और अलसी दोनों एक ही खेत में पास–पास खड़ें हैं। अलसी का पौधा दुबला–पतला और लचीला होता है इसलिए हवा से हिलता–डुलता रहता हैं। कविता में अलसी के तीन विशेषण दिए हैं– वह हठीली है, वह **देह** की पतली है और उसकी कमर लचीली है। अलसी

का फूल नीले रंग का होता है। अलसी को देखकर कवि को लगता है कि यह दुबली–पतली लड़की है, जो मचलती दिख रही है और मानो कह रही है, जो मुझ छू लेगा, मैं उसे अपना **हृदय** दे दूँगी। उससे प्यार **करुँगी**। और सरसों की न पूछो– किसी के निरालेपन की बात करनी होती है तो हम बात ऐसे ही शुरू करते है। सरसों की न पूछो! सरसों अब सयानी हो गई है। सयानी होने के तीन अर्थ है– एक तो समझदार होना, दूसरा नाजवान होना, तीसरा चतुर होना। यहां सरसों के विषय में उसे सयानी कहकर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया ह और बताया है कि वह विवाह–**योग्य** हो गई है इसलिए उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। हाथ पीले करना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ शादी कर लेना है।

विशष :इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

चना, अलसी, सरसों आदि वनस्पतियों को कवि ने मनुष्यों जैसा व्यवहार करते हुए दिखाया हैं। इस आधार पर हम कह सकते हैं **यहाँ** पर मानवीकरण अलंकार है।

(2) फाग गाता मास फागुन ..... उपजाऊ अधिक है।

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्य–पुस्तक हिन्दी **की कविता** 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' से ली गई है जिसके कवि केदारनाथ अग्रवाल है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि समाज के भिन्न–भिन्न व्यवहारों का उल्लेख प्रकृति के माध्यम से कर रहा है |

व्याख्या -कवि ने सरसों के प्रसंग में ही 'हाथ पीले करना' का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि सरसों जब फूलती है तो पूरा खेत ही पीला हो जाता है। पीला सरसों ब्याह के मंडप में पधार चुकी है। वहां गुलाबी साफा **बाँधे** चना पहले से ही बैठा हैं। विवाह की हलचल में फागुन का महीना कैस चुप रहता? वह फाग गाता हुआ **पहुँचा** है। फाग का गाना चने का सजना, सरसों का हाथ पीले करना इन सबमें एक–दूसरे का हो जाने की ललक है। इस दृश्य में कवि को लगता है, जैसे स्वयंवर हो रहा हैं। जिस प्रकार **माँ** विवाह–मंडप में कन्या के ऊपर **स्नेह** भरे

आँचल की छाँह करती है, उसी प्रकार **यहाँ** प्रकृति मां की भूमिका निभा रही है। प्रकृति का अनुराग भरा **आँचल** हिल रहा है।

यह दृश्य कवि के मन को छू लेता है। उसे लगता है इस ग्रामीण अंचल में किसी नगर की अपेक्षा अधिक प्यार भरा वातावरण है। नगर तो व्यावसायिक हो गए **हैं**। व्यावसायिक नगरों में प्यार कम उपजता है। ग्रामीण अंचल की भूमि प्रेम प्यार के लिए अधिक उपजाऊ है। जैसे इस निर्जन अंचल में भी प्रकृति के चप्पे–चप्पे में प्यार दिखाई पड़ रहा है।

विशेष :इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

कवि समाज के भिन्न–भिन्न व्यवहारों का उल्लेख प्रकृति के माध्यम से कर रहा हैं।

मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(3) और पैरों ..... उड़ती है गगन में।

संदर्भ : प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्य–पुस्तक हिन्दी **की कविता** 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' से ली गई है जिसके कवि केदारनाथ अग्रवाल **हैं**।

प्रसंग : पस्तुत पंक्तियों में कवि तालाब की लहरों, पोखर के तल तथा पत्थरों के सम्बन्ध के विषय में बताने का प्रयत्न कर रहे **हैं**।

व्याख्या- कवि को नीचे एक तालाब दिखाई पड़ता है जिसमें छोटी–छोटी लहरें उठ रही **हैं**। पोखर का तल नीला है पर उसमें भूरे रंग की कुछ घास भी उगी है। तालाब की लहरों में वह भी डोल रही है। सांझ होने को आई है और तालाब की सतह पर चांद का प्रतिबिम्ब चमक रहा है। उसकी चमक **आँखों** को चौंधिया देती हैं। **चाँद** के बारे में कवि की कल्पना देखिए– एक चांदी का बड़ा सा गोल **खंभा**। **चाँद** के लिए **चाँद** का बड़ा–सा गोल **खंभा**। कहना ठीक है, परन्तु क्या आप बता सकते **हैं** कि **चाँद** कवि को क्यों प्रतीत हुआ? जी **हाँ**! किसी तालाब या पोखर के हिलते जल में चांद का प्रतिबिम्ब उसकी गहराई का भी बोध कराता हैं। जब हम तालाब किनारे घूमने जाते है तो हमें अनेक पत्थर दिखाई देते **हैं**। कवि का ध्यान भी उन

पत्थरों की ओर जाता है। कवि कल्पना करता है कि वें पत्थर तालाब के किनारे पड़े चुपचाप उसका पानी पी रहे है। कब से? वर्षा से, शायद जब से तालाब बना जब से। कवि **यहाँ** पर तालाब और उसमें स्थित पत्थरों के प्राचीन साहचर्य को व्यक्त करता ह। तालाब में रहने **वाले अन्य वस्तुएँ** गतिशील हैं, लेकिन पत्थर बिना हिले–डुले उसमें चुपचाप पड़े हुए है। इन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि ये पत्थर पता नहीं कितने समय से चुपचाप तालाब का पानी पो रहे हैं।

तालाब के कुछ अन्य दृश्य में एक बगुला, जो पानी में टांगे डुबाए, ध्यानमग्न सोया हुआ–सा खड़ा **है** वह सचेत तो है, परन्तु देखने वाले को एसा लगता है जैसे सो रहा हैं। ज्यों ही उसे कोई चंचल मछली दिखाई पड़ती है वह उसे तत्काल लपककर गटक लेता है।

एक काले माथे वाली चालाक चिड़िया भी अपने सफेद पंख फैलाकर तालाब की सतह पर झपटकर पानी के भीतर से एक उजली सफेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है। ये सब चालाक व्यक्तियों के प्रतीक हैं।

विशेष - **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

कवि तालाब की लहरों, पोखर के तल तथा पत्थरों के सम्बन्ध के विषय में बताने का पयत्न कर रहे हैं।

सारांश

यह कविता प्रकृति–सौन्दर्य तथा ग्रामीण परिवेश के मोहक वातावरण को चित्रित करती है। इस वातावरण ने कवि को इतना आकर्षित किया कि खेत के मेड पर **बैठें-बैठें** उसने यह कविता रच डाली। देखे हुए प्राकृतिक सौंदय को पाठक तक **पहुँचाने** के लिए कवि ने एक सुन्दर कल्पना की है। उसने विवाह के उत्सव का आरोप प्रकृति पर किया है। जिस प्रकार विवाह **या** किसी अन्य उत्सव के अवसर पर मनुष्य समाज में हलचल बढ जाती है, वैसे ही कवि को प्रकृति भी **उल्लासित**, हलचल से युक्त लगती है।

कवि ने वातावरण की प्रत्येक वस्तु को बड़े ध्यान से देखा है, इसीलिए वह इतने प्रभावशाली **ढंग** से उसे प्रस्तुत कर पाया है। जिन चीजों को हम देखकर **अक्सर** उनकी उपेक्षा कर देते है, कवि ने उनका चित्रण, इस कविता में किया है। पोखर के तल में गतिमान पूरी घास, पोखर के पानी में चांद के प्रतिबिम्ब में गोल खंभे की कल्पना पत्थरों और पानी के लम्बे साथ को इस रूप में देखना कि पत्थर झुककर न जाने कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझती। इन सबके साथ बगुले और चिड़िया की गतिविधियों को कवि ने पाठक के सामने साक्षात कर दिया है।

जीवन–परिचय

कवि - केदारनाथ अग्रवाल

जन्म : केदारनाथ अग्रवाल का जन्म **बाँदा** जिले के कमासिन गांव में 1 अप्रैल 1911 को हुआ था।

शिक्षा : केदारनाथ अग्रवाल की प्रारम्भिक शिक्षा उन्हीं के **गाँव** में हुई थी। बाद में उन्होंने बाकी शिक्षा इलाहबाद में ग्रहण की।

रचनाएं जमुन जल तुम, फूल **नहीं** रंग बोलते हैं, आग का आईना अनहारी हरियाली, विवेक–विवेचन, कवि मित्रों से दूर ।

साहित्य में स्थान

उन्हें साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मुत्यु : केदारनाथ अग्रवाल की मुत्यु 1992 में हुई थी।

?